मुख्य ऑडिट के मामले	कैसे हमारे ऑडिट ने मुख्य ऑडिट मामलों को संबोधित किया

1. अग्रिमों का वर्गीकरण, अनिष्पादित अग्रिमों की पहचान, आय की पहचान और अग्रिमों पर प्रावधान (वित्तीय विवरणों की अनुसूची 9 के साथ अनुसूची 17 के नोट 7 और वित्तीय विवरणों की अनुसूची 18 (ए) के नोट 24 के साथ पढ़ा गया)

अग्रिम (प्रावधान का शुद्ध) बैंक की कुल संपत्ति का 68.65% है। वे, अन्य बातों के साथ-साथ, आय मान्यता, संपत्ति वर्गीकरण और प्रावधान (आईआरएसीपी) मानदंडों और नाबार्ड और आरबीआई द्वारा समय-समय पर जारी किए गए अन्य परिपत्रों और निर्देशों द्वारा शासित होते हैं जो अग्रिमों के प्रदर्शन और अनिष्पादित अग्रिमों (एनपीए) में वर्गीकरण से संबंधित दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।बैंक इन अग्रिमों को उपरोक्त आईआरएसीपी मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत करता है, जिसमें कोविड-19 नियामक पैकेज - संपत्ति वर्गीकरण और प्रावधान के संबंध में परिपत्र शामिल हैं

निष्पादित और अनिष्पादित अग्रिमों की पहचान में उचित तंत्र की स्थापना शामिल है, और प्रत्येक अनिष्पादित संपत्ति के लिए आवश्यक प्रावधान की राशि की पहचान करने और निर्धारित करने के लिए बैंक को निर्णय की महत्वपूर्ण डिग्री लागू करने की आवश्यकता होती है।

('एनपीए') विनियमों द्वारा निर्धारित मात्रात्मक और साथ ही गुणात्मक दोनों कारकों को लागू करना। बैंक अपने कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (सीबीएस) में अग्रिमों से संबंधित सभी लेनदेन के लिए हिसाब रखता है जो यह भी पहचानता है कि अग्रिम निष्पादित हैं या अनिष्पादित हैं और एनपीए वर्गीकरण करता है।

एनपीए की पहचान और प्रावधान के लिए महत्वपूर्ण निर्णय और अनुमान निम्न के लिए भौतिक गलत बयानों को जन्म दे सकते हैं:

आय की पहचान, संपत्ति वर्गीकरण, अनिष्पादित अग्रिमों की पहचान और अग्रिमों पर प्रावधान और नाबार्ड और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा जारी अन्य संबंधित परिपत्रों/निर्देशों (एक साथ 'आईआरएसीपी मानदंड' के रूप में संदर्भित) के लिए विवेकपूर्ण मानदंडों के संदर्भ में अग्रिमों के प्रति हमारा ऑडिट दृष्टिकोण/प्रक्रियाएं और बैंक की आंतरिक नीतियों और प्रक्रियाओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- एनपीए की पहचान के लिए बैंक की लेखा नीतियों को समझना और उनको ध्यान में लेना और आईआरएसीपी मानदंडों के अनुपालन का आकलनकरना, जिसमें कोविड-19 महामारी से उत्पन्न मौजूदा अनिश्चित आर्थिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए अग्रिमों पर किए गए अतिरिक्त प्रावधान शामिल हैं।
- मौजूदा आईआरएसीपी मानदंडों के आधार पर बिगड़े हुए खातों की पहचान और प्रावधान के लिए प्रमुख नियंत्रणों (एप्लिकेशन नियंत्रणों सहित) के डिजाइन और संचालन प्रभावशीलता को समझना, मूल्यांकन और परीक्षण करना।
- बैंक द्वारा एनपीए की पहचान को कवर करने वाली मूल ऑडिट प्रक्रियाओं सहित अन्य प्रक्रियाएं करना।

इन प्रक्रियाओं में शामिल है: -

क. एप्लिकेशन सिस्टम से उत्पन्न अपवाद रिपोर्ट के परीक्षण को ध्यान में रखते हुए जहां अग्रिम दर्ज किए गए हैं।

ख. प्रभाव की पहचान करने के लिए बैंक द्वारा रिपोर्ट किए गए खातों को विशेष उल्लेख खातों ("एसएमए") के रूप में देखते हुए।

ग. मात्रात्मक और गुणात्मक जोखिम कारकों के आधार पर चयनित उधारकर्ताओं के खाते के विवरण और अन्य संबंधित जानकारी की समीक्षा करना।

घ. क्रेडिट मॉनिटरिंग और रिकवरी मैनेजमेंट और रिस्क मैनेजमेंट कमेटी की बैठकों के मिनटों को पढ़ना और यह पता लगाने के लिए क्रेडिट और जोखिम प्रबंधन विभागों के साथ पूछताछ करना कि क्या प्रभाव के संकेतक थे या ऋण खाते या किसी उत्पाद में डिफ़ॉल्ट की घटना हुई थी।

Key Audit Matters	How our audit addressed the Key Audit Matters

1. Classification of Advances, Identification of Non-performing advances, Income Recognition and provisioning on Advances (Schedule 9 of the financial statements read with Note 7 of Schedule 17 and Note 24 of Schedule 18 (A) to the financial statements)

Advances (net of provision) constitute 68.65% of the Bank's Total Assets. They are, inter-alia, governed by Income Recognition, Asset Classification and Provisioning (IRACP) norms and other circulars and directives issued by the NABARD and RBI from time to time which provide guidelines related to classification of advances into performing and non-performing Advances (NPA). The bank classifies these advances based on the above IRACP norms including circulars in relation to COVID-19 Regulatory package – Asset classification and Provisioning.

Identification of performing and non-performing advances involves establishment of proper mechanism, and the bank is required to apply significant degree of judgement to identify and determine the amount of provision required against each non-performing asset

('NPA') applying both quantitative as well as qualitative factors prescribed by regulations. The bank accounts for all the transactions related to advances in its Core Banking Solution (CBS) which also identifies whether the advances are performing or non-performing and does the NPA classification.

Significant judgements and estimates for NPA identification and provisioning could give rise to material misstatements on:

- Completeness and timing of recognition of non-performing assets in accordance with criteria as per IRACP norms;
- Measurement of the provision for non-performing assets based on loan exposure, ageing and classification of the loan, realizable value of security;
- Appropriate reversal of unrealized income on the NPAs.

Our audit approach / procedures towards advances with reference to the prudential norms for income recognition, asset classification, identification of non-performing advances and provisioning on advances and other related circulars/directives issued by NABARD and Reserve Bank of India (RBI) (together referred to as 'IRACP Norms') and also internal policies and procedures of the Bank includes the following:

- Understanding and considering the Bank's accounting policies for NPA identification and provisioning and assessing compliance with the IRACP Norms including the additional provisions made on advances considering the current uncertain economic environment arising out of COVID-19 pandemic.
- Understanding, evaluating and testing the design and operating effectiveness of key controls (including application controls) for identification
-

and provisioning of impaired accounts based on the extant IRACP Norms.

- Performing other procedures including substantive audit procedures covering the identification of NPAs by the Bank.

These procedures included: -

a. Considering testing of the exception reports generated from the application systems where the advances have been recorded.

b. Considering the accounts reported by the Bank as Special Mention Accounts ("SMA") to identify stress.

c. Reviewing account statements and other related information of the borrowers selected based on quantitative and qualitative risk factors.

d. Reading of minutes of Credit Monitoring and Recovery Management and Risk Management committee meetings and performing inquiries with the credit and risk management departments to ascertain if there

- आईआरएसीपी मानदंडों के अनुसार मापदंड के अनुकूल अनुपयोज्य संपत्ति की मान्यता की पूर्णता और समय ;

- ऋण जोखिम, ऋण का पुराना होना और वर्गीकरण, प्रतिभूति के वसूली योग्य मूल्य के आधार पर अनिष्पादित संपत्ति के प्रावधान का मापन;

- एनपीए पर अप्राप्त आय का उचित रिवर्सल।

अग्रिमों के वर्गीकरण के बाद से, एनपीए की पहचान और अग्रिमों पर प्रावधान का निर्माण (कोविड-19 महामारी से उत्पन्न होने वाले अतिरिक्त प्रावधानों सहित) और अग्रिमों पर आय की पहचान:

- बैंक द्वारा उचित नियंत्रण तंत्र और आकलन के महत्वपूर्ण स्तर की आवश्यकता है;

- बैंक के समग्र वित्तीय विवरणों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है;

हमने इस क्षेत्र को एक मुख्य ऑडिट मामले के रूप में सुनिश्चित किया है

च. ऑडिट रिपोर्ट और सांविधिक शाखा ऑडिटर्स द्वारा जारी किए गए बदलावों के ज्ञापन को ध्यान में रखते हुए ।

छ. वर्ष के दौरान बैंक पर नाबार्ड की वार्षिक वित्तीय निरीक्षण रिपोर्ट, टिप्पणियों पर बैंक की प्रतिक्रिया और आरबीआई/नाबार्ड के साथ अन्य संचार को ध्यान में रखते हुए

ज. बैंक की नीतियों और प्रक्रियाओं के अनेसार सिस्टम ऑडिट, क्रेडिट ऑडिट, जोखिम आधारित आंतरिक ऑडिट और समवर्ती ऑडिट को ध्यान में रखते हुए।

झ.आरबीआई मास्टर परिपत्रों/दिशानिर्देशों के अनुपालन के संबंध में नमूना आधार पर प्रभावित अग्रिमों सहित अग्रिमों की जाँच।

पहचाने गए अनिष्पादित अग्रिमों के लिए, हमने प्रभावित क्षेत्रों और खाता भौतिकता सहित कारकों के आधार पर, आईआरएसीपी मानदंडों के अनुसार नमूना आधार पर संपत्ति वर्गीकरण तिथियों, अप्राप्त ब्याज का रिवर्सल, उपलब्ध सुरक्षा का मूल्य और प्रावधान का परीक्षण किया।हमने मुख्य इनपुट कारकों पर विचार करने के बाद नमूना आधार पर एनपीए खातों के प्रावधान को सत्यापित किया है और प्रबंधन द्वारा तैयार किए गए से हमारे माप परिणामों की तुलना की है।

2. निवेशों का वर्गीकरण और मूल्यांकन, अनिष्पादित निवेशों की पहचान और प्रावधान (वित्तीय विवरणों की अनुसूची 8 को वित्तीय विवरणों की अनुसूची 17 के नोट 4 के साथ पढ़ा गया)

बैंक के निवेश में सरकारी प्रतिभूतियां, डिबेंचर और बांड, शेयर आदि शामिल हैं और यह बैंक की कुल संपत्ति का 17.59% है।

ये आरबीआई और नाबार्ड के परिपत्रों और निर्देशों द्वारा शासित होते हैं। आरबीआई और नाबार्ड के इन निर्देशों में अन्य बातों के साथ-साथ निवेश का मूल्यांकन, निवेश का वर्गीकरण, अनिष्पादित निवेश की पहचान, आय की संबंधित अमान्यता और उसके खिलाफ प्रावधान शामिल हैं।

आरबीआई/नाबार्ड के परिपत्रों/निर्देशों के संदर्भ में निवेश के प्रति हमारे ऑडिट दृष्टिकोण/प्रक्रियाओं में मूल्यांकन, वर्गीकरण, अनिष्पादित निवेशों (एनपीआई) की पहचान और निवेश से संबंधित प्रावधान/मूल्यह्रास के संबंध में आंतरिक नियंत्रणों और मूल ऑडिट प्रक्रियाओं की समझ शामिल है।

विशेष रूप से,

क. हमने मूल्यांकन, वर्गीकरण, एनपीआई की पहचान और निवेश से संबंधित प्रावधान/मूल्यह्रास के संबंध में संबंधित आरबीआई दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए बैंक की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली का मूल्यांकन किया और समझा;

Since the classification of advances, identification of NPAs and creation of provision on advances (including additional provisions arising out of COVID-19 pandemic) and income recognition on advances:
- Requires proper control mechanism and significant level of estimation by the Bank;
- Has significant impact on the overall financial statements of the Bank;
we have ascertained this area as a Key Audit Matter

were indicators of stress or an occurrence of an event of default in a loan account or any product.
e. Considering audit reports and memorandum of changes issued by statutory branch auditors.
f. Considering the NABARD Annual Financial Inspection report on the Bank, the bank's response to the observations and other communication with RBI/NABARD during the year
g. Considering Systems Audit, Credit Audit, Risk Based Internal Audit and Concurrent Audit as per the policies and procedures of the Bank.
h. Examination of advances including stressed advances on a sample basis with respect to compliance with the RBI Master Circulars/Guidelines.

For non-performing advances identified, we, based on factors including stressed sectors and account materiality, tested on a sample basis the asset classification dates, reversal of unrealised interest, value of available security and provisioning as per IRACP norms. We have verified the provision for NPA accounts on sample basis after considering the key input factors and compared our measurement outcome to that prepared by management.

2. Classification and Valuation of Investments, Identification of and provisioning for Non-Performing Investments (Schedule 8 of the financial statements read with Note 4 of Schedule 17 to the financial statements)

Investments of the bank comprises of Government Securities, Debentures and Bonds, Shares etc. and constitutes 17.59 % of the Bank's Total Assets.

These are governed by the circulars and directives of RBI and NABARD. These directions of RBI and NABARD, inter-alia, cover valuation of investments, classification of investments, identification of non-performing investments, the corresponding non-recognition of income and provision there against.

Our audit approach / procedures towards Investments with reference to the RBI/NABARD Circulars/directives included the understanding of internal controls and substantive audit procedures in relation to valuation, classification, identification of non-performing investments (NPIs) and provisioning/depreciation related to Investments. In particular,

a. We evaluated and understood the Bank's internal control system to comply with relevant RBI guidelines regarding valuation, classification, identification of NPIs and

उपरोक्त प्रतिभूतियों की प्रत्येक श्रेणी (प्रकार) का मूल्यांकन आरबीआई/नाबार्ड द्वारा जारी परिपत्रों और निर्देशों में निर्धारित पद्धति के अनुसार किया जाना है जिसमें विभिन्न स्रोतों से डेटा/सूचना का संग्रह शामिल है।

जटिलताओं, निवेश के मूल्यांकन में शामिल निर्णय की सीमा और एनपीआई की पहचान, और नियामक फोकस की स्तर और बैंक के वित्तीय परिणामों के समग्र महत्व को ध्यान में रखते हुए, इसे एक मुख्य ऑडिट मामले के रूप में निर्धारित किया गया है।

तदनुसार, हमारा ऑडिट निवेशों के मूल्यांकन, वर्गीकरण, अनिष्पादित निवेशों की पहचान और निवेश से संबंधित प्रावधान पर केंद्रित था।

ख. हमने इन निवेशों के बाजार मूल्य का निर्धारण करने के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करने के लिए अपनाई गई प्रक्रिया का आकलन और मूल्यांकन किया ;

ग. हाथ में निवेश के चयनित नमूने के लिए, हमने सुरक्षा की प्रत्येक श्रेणी के लिए मूल्यांकन को फिर से निष्पादित करके आरबीआई मास्टर परिपत्रों और निर्देशों के अनुसार सटीकता और अनुपालन का परीक्षण किया। नमूनों का चयन यह सुनिश्चित करने के बाद किया गया कि निवेश (सुरक्षा की प्रकृति के आधार पर) की सभी श्रेणियां नमूने में शामिल हैं;

घ. हमने आरबीआई के परिपत्रों और निर्देशों के अनुसार बनाए रखे जाने वाले प्रावधान की स्वतंत्र रूप से पुनर्गणना करने के लिए मूल ऑडिट प्रक्रियाएं कीं। तदनुसार, हमने प्रत्येक श्रेणी के निवेश से नमूनों का चयन किया और आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार एनपीआई के लिए परीक्षण किया और एनपीआई के उन चयनित नमूने के लिए आरबीआई परिपत्र के अनुसार बनाए रखे जानेवाले प्रावधान की पुनर्गणना की।;

च. हमने निवेश एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर और वित्तीय विवरणों के बीच निवेश के मैपिंग का परीक्षण किया ताकि उक्त आरबीआई परिपत्र/निर्देशों के अनुसार प्रस्तुति और प्रकटीकरण आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।

3. वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए सूचना प्रौद्योगिकी ('आईटी') प्रणाली और नियंत्रण

बैंक की प्रणाली में स्वचालित नियंत्रण सहित मुख्य वित्तीय लेखांकन और रिपोर्टिंग प्रक्रियाएं सूचना प्रणालियों पर इस तरह से अत्यधिक निर्भर हैं कि एक जोखिम मौजूद होने पर, आईटी नियंत्रण वातावरण में गैप के परिणामस्वरूप वित्तीय लेखांकन और रिपोर्टिंग रिकॉर्ड भौतिक रूप से गलत हो सकते हैं।बैंक अपनी समग्र वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए कई प्रणालियों का उपयोग करता है और प्रतिदिन कई स्थानों पर बड़ी

वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए बैंक की आईटी प्रणालियों और संबंधित नियंत्रणों की समीक्षा के लिए हमारी ऑडिट प्रक्रियाओं के एक भाग के रूप में:

- हमने वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए महत्वपूर्ण सूचना प्रणालियों पर बैंक के आईटी एक्सेस नियंत्रण के डिजाइन और संचालन प्रभावशीलता का परीक्षण किया।

-हमने आईटी सामान्य नियंत्रणों (लॉजिकल एक्सेस, परिवर्तन प्रबंधन और आईटी संचालन नियंत्रण के पहलुओं) का परीक्षण किया। इसमें प्रणाली के एक्सेस के अनुरोधों का परिक्षण किया गया जिसमें उसकी समीक्षा की गई और

The valuation of each category (type) of the aforesaid securities is to be done as per the method prescribed in circulars and directives issued by the RBI/NABARD which involves collection of data/information from various sources.

Considering the complexities, extent of judgement involved in the valuation of investments and identification of NPI, and degree of regulatory focus and the overall significance to the financial results of the Bank, this has been determined as a Key Audit Matter.

Accordingly, our audit was focused on valuation of investments, classification, identification of non-performing investments and provisioning related to investments.

provisioning/depreciation related to investments;

b. We assessed and evaluated the process adopted for collection of information from various sources for determining market value of these investments;

c. For the selected sample of investments in hand, we tested accuracy and compliance with the RBI Master Circulars and directions by re-performing valuation for each category of the security. Samples were selected after ensuring that all the categories of investments (based on nature of security) were covered in the sample;

d. We carried out substantive audit procedures to recompute independently the provision to be maintained in accordance with the circulars and directives of the RBI. Accordingly, we selected samples from the investments of each category and tested for NPIs as per the RBI guidelines and recomputed the provision to be maintained in accordance with the RBI Circular for those selected sample of NPIs;

e. We tested the mapping of investments between the Investment application software and the financial statements to ensure compliance with the presentation and disclosure requirements as per the aforesaid RBI Circular/directions

3. Information Technology ('IT') Systems and Controls for financial reporting

The Bank's key financial accounting and reporting processes are highly dependent on information systems including automated controls in systems, such that there exists a risk that gaps in the IT control environment could result in the financial accounting and reporting records being materially misstated. The Bank uses several systems for its overall financial reporting and there is a large volume of transactions being recorded at multiple locations daily. In addition, there are increasing challenges to protect the integrity of the Bank's systems and data since cyber security has

As a part of our audit procedures for review of the Bank's IT systems and related controls for financial reporting:

- We tested the design and operating effectiveness of the Bank's IT access controls over the information systems that are critical to financial reporting.

-We tested IT general controls (logical access, changes management and aspects of IT operational controls). This included testing that requests for access to systems were reviewed and authorized. We inspected requests of changes to

मात्रा में लेनदेन दर्ज किए जा रहे हैं। इसके अलावा, बैंक के सिस्टम और डेटा की अखंडता की रक्षा करने के लिए चुनौतियाँ बढ़ रही हैं क्योंकि साइबर सुरक्षा हाल की अवधि में अधिक महत्वपूर्ण जोखिम बन गई है।

आईटी पर्यावरण की व्यापक प्रकृति और जटिलता के साथ-साथ सटीक और समय पर वित्तीय रिपोर्टिंग के संबंध में इसके महत्व के कारण, हमने इस क्षेत्र को एक मुख्य ऑडिट मामले के रूप में पहचाना है।

अधिकृत किया गया।हमने अनुमोदन और प्राधिकरण के लिए प्रणाली में बदलाव के अनुरोधों का निरीक्षण किया। हमने विभिन्न इंटरफेस, कॉन्फ़िगरेशन और अन्य एप्लीकेशन लेयर नियंत्रणों से संबंधित नियंत्रण वातावरण को ध्यान में लिया। उपरोक्त के अलावा, हमने कुछ स्वचालित नियंत्रणों के डिजाइन और संचालन प्रभावशीलता का परीक्षण किया जिन्हें मुख्य आंतरिक वित्तीय नियंत्रण माना जाता था। जहां कमियों की पहचान की गई, हमने क्षतिपूर्ति नियंत्रणों के संबंध में स्पष्टीकरण मांगा या वैकल्पिक ऑडिट प्रक्रियाएं कीं।इसके अलावा, हमने ऑडिट अवधि के दौरान आईटी परिदृश्य में किए गए संबंधित परिवर्तनों को समझा और उन परिवर्तनों का परीक्षण किया जिनका वित्तीय रिपोर्टिंग पर महत्वपूर्ण प्रभाव था।

4. कोविड-19 के प्रकोप के आलोक में संशोधित ऑडिट प्रक्रियाएँ:

हमारे ऑडिट की अवधि के दौरान कोविड-19 महामारी, सरकार/स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा लगाए गए लॉकडाउन और यात्रा प्रतिबंधों और जहां कहीं भी भौतिक पहुंच संभव नहीं थी, वहां दूर से ऑडिट करने की सुविधा के लिए बैंक को आरबीआई के निर्देश के कारण बैंक की शाखाओं के परिसर में जाकर ऑडिट नहीं किया जा सका।

तदनुसार, ऑडिट को दूरस्थ रूप से करने के लिए हमारी ऑडिट प्रक्रियाओं को संशोधित किया गया था।

चूंकि हम व्यक्तिगत रूप से/शारीरिक रूप से/शाखाओं में अधिकारियों के साथ चर्चाओं और व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से पूरी तरह से ऑडिट साक्ष्य एकत्र नहीं कर सके, इसलिए हमने इस तरह की संशोधित ऑडिट प्रक्रियाओं को मुख्य ऑडिट मामले के रूप में पहचाना है।

हमारे ऑडिट की अवधि के दौरान कोविड-19 महामारी के प्रकोप के कारण सरकारों/स्थानीय प्रशासन द्वारा लगाए गए लॉकडाउन और अन्य यात्रा प्रतिबंधों के कारण, हम संबंधित कार्यालयों में शारीरिक रूप से ऑडिट प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए बैंक की शाखाओं की यात्रा नहीं कर सके।

जहां कहीं भी शारीरिक पहुंच संभव नहीं थी, बैंक द्वारा डिजिटल माध्यम और ईमेल के माध्यम से हमें आवश्यक रिकॉर्ड / रिपोर्ट / दस्तावेज / प्रमाण पत्र उपलब्ध कराए गए थे।इस हद तक, ऑडिट प्रक्रिया हमें उपलब्ध कराए गए ऐसे दस्तावेजों, रिपोर्टों और रिकॉर्ड्स के आधार पर की गई थी, जिन्हें वर्तमान अवधि के लिए ऑडिट और रिपोर्टिंग के लिए ऑडिट साक्ष्य के रूप में प्रदान किया गया था।

तदनुसार, हमने अपनी ऑडिट प्रक्रियाओं को निम्नानुसार संशोधित किया:

- बैंक की कुछ शाखाओं के संबंध में, जहां कहीं भी शारीरिक पहुंच संभव नहीं थी, वहां ईमेल के माध्यम से आवश्यक रिकॉर्ड/दस्तावेजों का इलेक्ट्रॉनिक रूप से सत्यापन किया गया।
- ईमेल के माध्यम से हमें उपलब्ध कराए गए दस्तावेजों, विलेखों, प्रमाणपत्रों और संबंधित रिकार्ड्स की स्कैन की गई प्रतियों का सत्यापन किया।
- फोन कॉल/कॉन्फरेन्स कॉल, ईमेल और इसी तरह के संचार चैनलों पर चर्चा के माध्यम से पूछताछ करना और आवश्यक ऑडिट साक्ष्य एकत्र करना।

become a more significant risk in recent periods. Due to the pervasive nature and complexity of the IT environment as well as its importance in relation to accurate and timely financial reporting, we have identified this area as a Key Audit Matter.

systems for approval and authorization. We considered the control environment relating to various interfaces, configuration and other application layer controls.
In addition to the above, we tested the design and operating effectiveness of certain automated controls that were considered as key internal financial controls. Where deficiencies were identified, we sought explanations regarding compensating controls or performed alternate audit procedures. In addition, we understood where relevant, changes made to the IT landscape during the audit period and tested those changes that had a significant impact on financial reporting

4. Modified Audit Procedures carried out in light of COVID-19 outbreak:

Due to COVID-19 pandemic, lockdown and travel restrictions imposed by Government/Local Authorities during the period of our audit and the RBI directions to Bank to facilitate carrying out audit remotely wherever physical access was not possible, audit could not be conducted by visiting

the premises of branches of the bank.
Accordingly, our audit procedures were modified to carry out the audit remotely.

As we could not fully gather audit evidence in person / physically / through discussions and personal interactions with the officials at the Branches, we have identified such modified audit procedures as a Key Audit Matter.

Due to the outbreak of COVID-19 pandemic that caused lockdown and other travel restrictions imposed by the Governments/local administration during the period of our audit, we could not travel to Branches of the bank to carry out the audit processes physically at the respective offices.

Wherever physical access was not possible, necessary records / reports / documents / certificates were made available to us by the Bank through digital medium and emails. To this extent, the audit process was carried out on the basis of such documents, reports and records made available to us which were relied upon as audit evidence for conducting the audit and reporting for the current period.

Accordingly, we modified our audit procedures as follows:
- Conducted verification of necessary records/documents electronically through emails in respect of some of the Branches of the Bank wherever physical access was not possible.

- Carried out verification of scanned copies of the documents, deeds, certificates and the related records made available to us through emails.

- Making enquiries and gathering necessary audit evidence through discussions over phone calls / conference calls, emails and similar communication channels.